भाग - २

प्रथम अध्याय

हिंदी-वल्लरी-१० क्या? क्यों? कैसे?

प्रस्तुत **हिंदी वशलरी** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-२००५ के अनुरूप छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु निर्मित है। यह पाठ्यपुस्तक २०१४-१५ के सत्र से, दसवीं कक्षा को पढ़ायी जानेवाली है। इसमें पाठों का चयन, लेखन एवं संकलन छात्रों के बौद्धिक क्षमता और रुचि के अनुसार किया गया है। इससे छात्रों को चिंतन एवं तार्किक शक्ति द्वारा स्कूली जीवन के साथ-साथ अपने आस-पास के बाहरी जीवन से संबंध जोड़ने के लिए सहायता अवश्य मिलेगी।

इस पाठ्यपुस्तक में प्रसिद्ध साहित्यकारों के रेखाचित्र, साक्षात्कार, जीवनी,दोहे,कहानी,कविता आदि के साथ-साथ छात्रों के ज्ञान विस्तार के लिए अपठित गद्यांश, निबंध, पत्रलेखन, व्याकरण आदि विभिन्न विषयों का चयन इसलिए किया है गया कि छात्र हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्ध परंपरा का यत्किंचित् ज्ञान प्राप्त कर सकें।

इस पुस्तक में निहित कविताओं में **प्रभो**! कविता द्वारा छात्रगण भगवान की असीम महिमा का ज्ञान पाते हैं। **मातृभूमि** कविता द्वारा देशप्रेम के साथ-साथ जीवन- संपदा. खनिज संपत्ति इत्यादि का परिचय प्राप्त करने के साथ-साथ मनुष्य जीवन में इनकी उपयोगिता को भी समझ सकते हैं। **अभिनव मनुष्य** कविता द्वारा मानव-मानव के बीच के स्नेह तथा भाईचारा,इससे राष्ट्र निर्माण में कितनी सहायता मिलती है इससे परिचित होते हैं । **तुलसी के दोहों** द्वारा नेता के गुण कैसे हो? भलाई बुराई का विश्लेषण कैसे किया जाय,आदि विचारों से अवगत होते हैं। **सूर**

श्याम पद द्वारा बच्चों की मनःस्थिति, बच्चों की शिकायत,भोलेपन, पर मुग्ध होने के साथ-साथ रसस्वाद कर लेते हैं।

इस पुस्तक में निहित गद्य पाठों में **रवींद्रनाथ ठाकुर जी जीवनी** द्वारा ठाकुर जी की साहित्यिक साधना समाज के लिए उनकी उपलब्धि आदि से जानकारी प्राप्त करेंगे।**भक्तों के भगवान** कहानी द्वारा प्रत्येक व्यक्ति पर भगवान की असीम कृपा कैसी होती है ? इसे समझते हैं। **इंटरनेट क्रांति** संवाद द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में इंटरनेट की आवश्यकता, लाभ और हानी से सतर्क होते हैं।**गिल्लू** रेखाचित्र द्वारा पशुपक्षियों के स्वभाव को ध्यानपूर्वक देखने का गुण सीख लेते हैं।

बसंत की सच्चाई एकांकी से स्वाभिमान, सच्चाई,दया आदि अच्छे गुणों को अपनाते हैं । **कर्नाटक संपदा** निबंध द्वारा कर्नाटक के अतीत और वर्तमान के विचारों से परिचित होते हैं।**भीष्म साहनी की आत्मकथांश** से आत्म विश्वास बढ़ाने की प्रेरणा पाते हैं।**ईमानदारों के सम्मेलन में** व्यंग्य रचना द्वारा ईमानदार कहलानेवाले लोगों की बेईमानी से सतर्क रहने की शक्ति हासिल करते हैं।**वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का** व्यक्ति परिचय द्वारा पर्यावरण की रक्षा करने की प्रेरणा पाते हैं।साहित्य सागर का मोती साक्षात्कार द्वारा चंद्रशेखर कंबार जी की साहित्यिक साधना और सिद्धि से परिचित होते हैं।

इस पुस्तक के परिशिष्ट में छात्रों के ज्ञान की वृद्धि के लिए अपठित गद्यांशों का समावेश भी किया गया है। इसके साथ-साथ निबंध लेखन,विभिन्न प्रकार के पत्रलेखन,व्याकरण से संबंधित अनेक विषयों का परिचय कराने का प्रयास किया गया है।

प्रत्येक पाठ के बाद विषयाधारित विभिन्न प्रकार के प्रश्न विधाओं के साथ-साथ भाषाभ्यास और क्रियाकलापों के लिए स्थान दिया गया है।इससे छात्रों की जिज्ञासा एवं कल्पना शक्ति बढ़कर उनकी चिंतन और तार्किक शक्ति निश्चय ही बढ़ेगी।

हिंदी वल्लरी पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति प्रेम उत्पन्न करके राष्ट्र की एकता की कडी़ को मजबूत बनाने का कार्य करती है।

*****

द्वितीय अध्याय

गद्य शिक्षण

पाठ बोध के आयाम(मार्गदर्शक/मार्गदर्शिकाओं के लिए)

पाठ का शीर्षकः-२ रवींद्रनाथ ठाकुर (गद्य)

१. साहित्यिक विचारः-

अ. गद्य की भूमिका

आ. गद्य के प्रकार (विभिन्न महान व्यक्तियों की जीवनी)

२. गद्य के प्रमुख बिंदुः-

अ. रवींद्रनाथ ठाकुर का बचपन

आ. शिक्षा

इ. माता-पिता

ई. स्वभाव

उ. साहित्यिक और सामाजिक देन

ऊ. पुरस्कार

३. भाषिक विचारः-

*. भाषा कौशलः-

१. सुनना, बोलना,पढ़ना और लिखना।

*. व्यावहारिक व्याकरणः-

१. लिंग

२. वचन

३. प्रेरणार्थक क्रिया

*. शब्दभंडारः-

१. नये शब्दों का अर्थ

२. विरुद्धार्थक शब्द

३. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

४. जीवन शिक्षणः-

१. समाज के लिए कुछ कर गुजरना ।

५. मूल्यः-

१. साहित्य प्रेम
२. देशाभिमान
३. सामाजिक प्रेम
४. साहित्यक प्रेम

६. पूरक साहित्यः-

१. गीतांजलि कृति
२. रवींद्रनाथजी की जीवनी का परिचय
३. काबुलीवाला कहानी
४. सर,नोबेल पुरस्कार,डी.लिट उपाधि।
५. विश्वभारती, शांतिनिकेतन और बोलपुर स्कूल।

७. सहायक सामग्रीः-

१. रवींद्रनाथठाकुर जी का चित्र
२. गीतांजलि का पुस्तक
३. शांतिनिकेतन का चित्र
४. नोबेल पुरस्कार, सर-पुरस्कारों का चित्र।

८. उपयुक्त गतिविधियाँः-

१. भाषण
२. चर्चा
३. आशुभाषण
४. जीवनी (परियोजना)

प्रतिदर्श पाठयोजना

रवींद्रनाथ ठाकुर (गद्य)

कौशल	सहायक सामग्री	शिक्षण की गतिविधियाँ	आकलन के उपकरण	दिनांक
पढ़ना-लिखना- बोलना	रेडियो,दूरदर्शन कंप्यूटर और छात्र	*.छात्रों को चार समूहों में बाँटना। *.प्रत्येक समूह को जीवनी आधारित बिंदुओं का एक-एक चार्ट देना। *.हर बिंदुओं को पढ़ना और जीवनी पूरा करना। *.हर समूह बिंदुओं के आधार पर पूरा करने के बाद प्रस्तुत करना।	***वस्तुनिष्ठ प्रश्न** ***लघूत्तर के प्रश्न** ***दीर्घोत्तर के प्रश्न**	
पढ़ना- लिखना	चार्ट	**अभ्यास कार्य की गतिविधियाँ** *. बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद पूरा करना। (बिंदुओं का चार्ट) *. जीवनी आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना। (अभ्यास चार्ट)	***.अवलोकन सूची**	
	प्रश्न पत्रिका	**आकलन की गतिविधियाँ** *.विषयानुसार प्रस्तुत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखना। *.प्रश्नपत्रिका के प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर लिखना। (रवींद्रनाथ ठाकुर)	***जाँच सूची/ अंकतालिका**	
रचना/ अभिव्यक्ति	विषय सूची	**परियोजना की गतिविधियाँ** *.निम्नलिखित संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी प्रसिद्ध साहित्यकार का एक अनुच्छेद लिखिये।(जन्मः शिक्षा-दीक्षा,माता-पिता, रुचि और सामजिक देना ।)	*** पैमाना आकलन**	

पाठ–२,रवींद्रनाथ ठाकुर

उद्देश्यः–

- भाषा कौशलों का विकास करना।
- रवींद्रनाथ ठाकुरजी की जीवनी परिचय देना

प्रक्रियाः–

मार्गदर्शक मार्गदर्शिकाओं को कक्षा में प्रवेश करने के बाद वहाँ उपस्थित छात्रों को चार समूह में बाँटना होगा । समूह को पहचानने के लिए उन्हें अलग–अलग नाम दे

मार्गदर्शक चुने हुए पाठ से संबंधित बिंदुओं को एक समूह को दें

प्रथम समूह के छात्र रवींद्रनाथ ठाकुर जी के जन्म तथा शिक्षा से संबंधित बिंदुओं को एक–एक करके पढेंगे। अन्य छात्र उन बिंदुओं को ध्यान से सुनेंगे । इस संदर्भ में मार्गदर्शक / मार्गदर्शिका रवींद्रनाथ ठाकुरजी का चित्र दर्शायेंगे।

प्रथम समूह के बिंदुः–

१. जन–गण–मन राष्ट्रगीत के सृजनकर्ता रवींद्रनाथ ठाकुर हैं।
२. रवींद्रनाथ ठाकुरजी को सर्वोच्च पुरस्कार नोबेल पुरस्कार से अलंकृत किया गया है।
३. रवींद्रनाथ ठाकुर जी का जन्म ७ मई १८६१ को हुआ।
४. महर्षि देवेंद्रनाथ रवींद्रनाथ ठाकुरजी के पिता थे। वे ब्रह्मसमाज के बड़े नेता थे।
५. रवींद्रनाथजी की पढ़ाई पहले कॉन्वेंट में और बाद में घर पर ही हुई।
६. सत्रह वर्ष की आयु में इंगलैंड गये तथा वहाँ युनिवर्सिटी ऑफ लंदन में प्रविष्ट हो गये।
७. चौबीस वर्ष की आयु में पिता का दायित्व संभाला और ग्राम्य जीवन का आनंद लेने लगे।
८. जन्मजात साहित्यकार तथा कवि होने के नाते राजनीति की ओर अधिक समय तक आकर्षित नहीं रहें।

उसी तरह दूसरे (द्वितीय) समूह के छात्र ठाकुरजी की साहित्यिक साधना, पुरस्कार से संबंधित आदि बिंदुओं को पढ़ेंगे। पहले की तरह अन्य समूह के छात्र भी ध्यान से सुनेंगे। इस संदर्भ में मार्गदर्शक जलियाँवाला हत्याकांड का चित्र दर्शायेंगे।

द्वितीय समूह के बिंदुः-

१. रवींद्रनाथ ठाकुर ने विपुल साहित्य की रचना की है।
२. निंबध, नाटक,कविताएँ और उपन्यास लिखे हैं।
३. एक श्रेष्ठ चित्रकार भी थे।
४. १९१२ में इंग्लैंड गये तथा गीतांजलि का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसलिए १९१३ में नोबेल पुरस्कार मिला। उसी साल उन्हें सर की उपाधि मिली।
५. १९१९ में अमानवीय जलियाँवाला बाग हत्याकांड होने से सर की उपाधि त्याग दी।
६. १९२१ में बोलपुर के स्कूल को विश्वभारती के रूप में व्यापक कर दिया।
७. लोग उन्हें गुरुदेव कहते थे।
८. देश विभाजन के दिनों में उन्होंने जो कविताएँ लिखीं वे आज भी नवयुवकों को स्फूर्ति प्रदान करती हैं।

तीसरे समूह के छात्र ठाकुरजी की रचनाओं से संबंधित बनाये गये बिंदुओं को पढेंगे। उसी तरह अन्य छात्र उन बिंदुओं को ध्यान से सुनेंगे और समझेंगे।

तृतीय समूह के बिंदुः-

१. महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर आदर्शवादी थे और उनकी कल्पना की उड़ान ऊँची थी।
२. उनकी रचनाएँः-
   काव्य - गीतांजलि, नैवेद्य।
   कहानी संग्रह - काबूलीवाला, सुभा,क्षुधित पाषण,
   नाटक - चित्रांगदा,डाकघर,राजा।
   उपन्यास - धर और बाहर, गोरा, आँख की किरकिरी
३. रवींद्रजी का बंगला साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य में भी उच्च स्थान है।

४. उनकी कविताओं का अनुवाद दुनिया की कई भाषाओं में हो चुका है।

चौथे समूह के छात्र ठाकुरजी से स्थापित शिक्षा संस्था शांतनिकेतन (विश्वभारती) से संबंधित बिदु पढ़ेंगे। उसी तरह अन्य समूह के छात्र ध्यान से उन बिंदुओं को सुनेंगे तथा समझेंगे। मार्गदर्शक विश्वभारती का चित्र दर्शायेंगे।

चतुर्थ समूह बिंदुः-

१. रवींद्रनाथ ने आदर्श महविद्यालय खोलने का विचार कर शांतिनिकेतन की स्थापना की।

२. रवींद्रजी चाहते थे कि लोगों की प्रतिभा उनकी आजीविका का साधन भी बनें।

३. शांतिनिकेतन आज कला, संगीत, नृत्य और चित्रकला, के अध्ययन के लिए विश्वभारती आदर्श विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त प्रक्रिया के पश्चात् मार्गदर्शक समूहों को सूचित करेंगे कि उन्हें दिये गये बिंदुओं के आधार पर गद्य रूप में लिखे। तत्पश्चात् मार्गदर्शक छात्रों के लिखे हुए लेख जाँचेंगे तथा लेख में कुछ गलतियाँ हो तो सुधारेंगे।

पाठ प्रक्रिया के पश्चात् मार्गदर्शक छात्रों को पाठ संबंधित प्रश्न पूछेंगे। वे प्रश्न वस्तुनिष्ठ,लघूत्तर प्रश्न, और दीर्घोत्तर के रूप में रहेंगे।

जैसेः-

१. **वस्तुनिष्ठः-**

- रवींद्रनाथ ठाकुर किसके प्रतिनिधि थे?
- रवींद्रनाथ ठाकुर जी के पिताजी का नाम क्या था?
- रवींद्रनाथ ठाकुरजी का जन्म कब हुआ?
- रवींद्रनाथ ठाकुरजी इंग्लैंड कब गये?

२. अनि लघूत्तर प्रश्न :-

- रवींद्रनाथजी ने सर की उपाधि क्यों त्याग दी ?
- रवींद्रनाथ जी ने किन-किन विषयों पर लेख लिखे हैं?
- रवींद्रनाथजी की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
- शिक्षा संबंधित ठाकुरजी का क्या आशय था?

३. दीर्घोत्तरः-

- रवींद्रनाथजी को कौन-कौन सी उपाधियाँ मिलीं?
- शिक्षा क्षेत्र में रवींद्रनाथजी की देन क्या है?

अभ्यासः-

प्रश्नोत्तरी प्रक्रियाओं के पश्चात् कक्षा में अभ्यास प्रक्रिया होगी। इसके अंतर्गत हरएक छात्र समूह को अलग-अलग तरह के अभ्यास देकर उनसे उत्तर पाना है। इस प्रक्रिया में छात्रों से हुई गलतियों को सुधारना। छात्रों द्वारा पूर्ण किये अभ्यास को छात्रों से ही पढ़वाना। इससे छात्र अभ्यास विषय पर ध्यान देंगे और नये विषय सीखेंगे।

उदाः-

प्रथम समूह के अभ्यास

वाक्यों में प्रयोग कीजिये।

- विश्वविख्यात
- आंदोलन
- प्रतिनिधि
- सम्मान
- कौशल

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय उत्तर दिये गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर लिखियेः-

- रवींद्रनाथ ठाकुरजी को इस सर्वोच्च पुरस्कार से अलंकृत किया गया।------

  अ.सरस्वती आ.डॉक्टरेट इ.नोबेल पुरस्कार ई पद्मभूषण
- रवींद्रनाथ ठाकुरजी के पीताजी का नाम था।--------------------

  अ.रामनाथ आ.महार्षि देवेंद्रनाथ इ.साईनाथ ई. नागनाथ
- रवींद्रनाथ की पढ़ाई पहले यहाँ आरंभ हुई---------------------

  अ.स्कूल आ.कान्वेंट इ.हाईस्कूल ई.गुरुकुल
- इस वर्ष की आयु में रवींद्रनाथ जी इंग्लैंड गये-------------------

  अ.सत्रह आ.बीस इ.दस ई.बारह

द्वितीय समूह के अभ्यास

पर्यायवाची शब्द लिखियेः-

- आयु
- विपुल
- स्फूर्ति
- संपदा
- गौरव

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय उत्तर दिये-गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर लिखियेः-

- रवींद्रनाथजी की कल्पना की उड़ान ऐसी थी-------------------

  अ.छोटी आ.बड़ी इ.ऊँची ई.संकुचित
- रवींद्रनाथ जी का बंगला साहित्य के साथ-साथ इस साहित्य में भी उच्च स्थान है--

अ.अंग्रेजी आ.बंगला इ.मराठी ई.कन्नड

- रवींद्रनाथजी का यह एक कहानी संग्रह है------------------

अ.गबन आ.साकेत इ.काबुलीवाला ई.उड़ान

- भारत के लोग रवींद्रनाथ जी को कहते हैं---------------------

अ.आचार्य आ.भगवत इ.शिष्य ई.गुरुदेव

तृतीय समूह के अभ्यासः-

अन्यवचन रूप लिखियेः-

- परिवार
- योजना
- कलाएँ
- उपाधि
- उड़ान

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय दिये-गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर लिखियेः-

- रवींद्रनाथ इस साहित्य को अत्यधिक समृद्ध बनाया है-------------

अ.कन्नड आ.बंगला इ.उर्दू ई.अंग्रेजी

- रवींद्रनाथ एक श्रेष्ठ ------------------------------ भी थे।

अ.गायक आ.वैज्ञानिक इ.चित्रकार ई.किसान

- रवींद्रनाथ इस काव्य संग्रह को अंग्रेजी में अनुवाद किया------------।

अ.गीतांजलि आ.पतंजली इ.साकेत ई.निबंध

- ठाकुरजी जलियाँवालाबाग हत्याकांड से इस उपाधि को त्याग दी--------।

अ. ज्ञानपीठ आ.सर इ.नोबेल ई.पद्भूषण

चतुर्थ समूह के अभ्यासः-

वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखियेः-

- लेख लिखनेवाला---------------------
- उपन्यास लिखनेवाला-------------------
- शिकार करनेवाला---------------------
- कपड़े धोनेवाला----------------------
- कपडे बुननेवाला----------------------

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय उत्तर दिये-गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर लिखियेः-

- यहाँ ठाकुरजी ने स्कूल की स्थापनी की---------

  अ.बोलपुर आ.बेंगलूर इ.मद्रास ई.कलकत्ता

- ठाकुर जी द्वारा स्थापित स्कूल का नाम है-------

  अ.किंडरगार्डन आ.ऑक्सफर्ड इ.शांतिनिकेतन ई.सेंटजोसेफट

- शांतिनिकेतन आगे चलकर विश्वभारती नाम से बना---------

  अ.कॉलेज आ.स्कूल इ.ऑफिस ई.विश्वभारती

उपर्युक्त विविरण के अनुसार कक्षा में छात्रों के द्वारा सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना-इन अंशो पर पाठ प्रक्रिया चलती है। इसके पश्चात् मार्गदर्शक के द्वारा छात्रों को परियोजना दी जाती है।

* भारतरत्न तथा नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय मनीषियों के चित्र इकट्ठा कीजिए और उनके संबंध में पाँच-पाँच वाक्य लिखिये। परियोजना में उनका जन्म, शिक्षा-दीक्षा,माता-पिता,और सामाजिक देन हो। कुल मिलाकर परियोजना के लिए १० अंक हो।

परियोजना कार्यो को सहपाठीयों से मूल्यांकन कराया जाए ।

*****

तृतीय अध्याय

कविता शिक्षण

पाठ बोध के आयाम(मार्गदर्शक/मार्गदर्शिकाओं के लिए)

पाठ का शीर्षकः-१ प्रभो!

१. साहित्यिक विचारः-

अ. पद्य की भूमिका

आ.पद्यांशों का अध्ययन(मैथिलीशरणगुप्त, हरिऔध, दिनकर)

इ. जयशंकरप्रसाद का जीवन परिचय

२. पद्य के प्रमुख बिंदुः-

अ. भगवान का अस्तित्व

आ. भगवान का स्वरूप

इ. भगवान की लीला

ई. प्रकृति में भगवान के दर्शन

उ. भगवान की महिमा ।

३. भाषिक विचारः-

*. भाषा कौशलः-

१. सुनना, बोलना,पढ़ना और लिखना।

*. व्यावहारिक व्याकरणः-

१. छंदों की रचना की जानकारी

*. शब्दभंडारः-

१. नये शब्दों का अर्थ

५. पूरक साहित्यः-

१. कानन-कुसुम

२. अन्य प्रार्थना गीत

३. जयंशंकर प्रसाद जी की जीवनी

६. सहायक सामग्रीः-

१. प्रसाद जी का भावचित्र

२. प्रश्न तालिका

३. कविता से संबंधित अन्य चार्ट।

७. उपयुक्त अन्य गतिविधियाँः-

१. पद्य गायन
२. सारांश लिखना
३. भावार्थ लिखना

प्रतिदर्श पाठयोजना

पाठ-१ प्रभो-(पद्य)

कौशल	सहायक सामग्री	गतिविधियाँ	आकलन के उपकरण	दिनांक
		शिक्षण की गतिविधियाँ		
सुनना- बोलना	रेडियो,दूरदर्शन कंप्यूटर और छात्र	*.छात्रों को तीन समूहों में बाँटना।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न * लघूत्तर के प्रश्न * दीर्घोत्तर के प्रश्न	
		*.पहला समूह को पहला छंद और बहुविकल्पीय प्रश्नयुत चार्ट देना।		
		*.दूसरे समूह को पहले दोनों छंदों के साथ अति लघूत्तर के प्रश्नयुत चार्ट देना।		
		*.तीसरे समूह को तीनों छंद और लघूत्तर के प्रश्नयुत चार्ट देना।		
		*.पद्य सुनने के बाद प्रत्येक समूह से अपने चार्ट पर लिखित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़ना और आपस में चर्चा करने के बाद अपने समूह के प्रश्नों के उत्तर देना।		
पढ़ना- लिखना	चार्ट	**अभ्यास कार्य की गतिविधियाँ**	*अवलोकन सूची	
		*अन्य प्रार्थनागीतों का वाचन करना उसके प्रश्नों के उत्तर लिखना।		
		***प्रभो** पदय का भावार्थ और सारांश लिखना ।		
		***प्रभो** पदय के प्रश्नों के उत्तर लिखना।		
		आकलन-१(तकनीक)	*जाँच सूची/ अंकतालिक ा	
	प्रश्न पत्रिका	*अपठित प्रार्थनागीतों को पढ़ना और उसके नीचे के प्रश्नों के उत्तर लिखना। *पद्य का वाचन करना , प्रश्नों के उत्तर, भावार्थ और सारांश लिखना।		
रचना/ अभिव्यक्ति	विषय-सूची	**परियोजना-१(तकनीक)** *प्रार्थना गीतों का संग्रह करना और कक्षा में प्रस्तुत करना। *.प्रार्थना गीतों का गाने के संदर्भों की तालिका बनाना।	* पैमाना आकलन	

मानव को परमानंद पहुँचानेवाली साहित्य की विधाओं में कविता एक है जिस से दिव्य आनंद की अनुभूति होती है।

मानवीय जीवन को रमणीय बनाने के लिए जो अनेक ललित कलाएँ हैं, उनमें से काव्य कला प्रमुख स्थान रखती है।

भाषा में जिस प्रकार गद्य का महत्व है, उसी प्रकार कविता का भी महत्त्व है, जिससे देशप्रेम , अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव,प्रेम, दया,सहानुभूति आदि गुण विकसित होते हैं। कविता से छात्रों का चरित्र निर्माण भी होता है। इसलिए पाठ्यचर्या में भी उसका प्रमुख स्थान है।

कविता शिक्षण के उद्देश्यः-

* भाषा के प्रमुख चार कौशलों का विकास करना।
* कल्पना शक्ति का विकास करना।
* सृजनात्मक शक्ति विकास करना।
* कवि की अनुभूतियाँ,भाव,आदर्शों तथा कल्पना को छात्रों तक पहुँचाना।

कविता के सफल शिक्षण के लिए अनेक प्रणालियाँ प्रचलित हैं। उनमें प्रमुख हैंः-

१. गीतप्रणाली

२. अभिनय प्रणाली

३. अर्थ-बोध प्रणाली

४. व्याख्या प्रणाली

५. खंडान्वय प्रणाली

आज राष्ट्रीय पाठ्यचर्या २००५ के आधार पर शिक्षण की गतिविधियों में महत्वपूर्ण बदलाव आये हैं। इन बदलावों के अनुसार कविता को पढ़ाते समय छात्रों को सजग बनाने हेतु शिक्षक को निम्नांकित बातों पर ध्यान देना आवश्य हैं।

- कवि के आशय के बारे में छात्र विचार करके और समूह में चर्चा करना।
- अन्य कविताओं के भावार्थ और सारांश लिखाना।
- कविता के बारे में जानकारी प्राप्त कराना।
- रसानुभूति का विकास होने के साथ-साथ कल्पनाशक्ति भी विकास कराना।
- भाषिक विचारों के बारे में भी छात्र ज्ञान प्राप्त करना(व्याकरणांश का परिचय, नये शब्दों का अर्थ ग्रहण करना आदि)
- कविता के मूल्य को समझकर अपनाना।

पाठ-१ प्रभो ! (कविता)

उद्देश्यः-

*. भाषा कौशलों को विकसित करना।

*. भाषिक विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

(छात्रों को तीन समूहों में बाँटना और कई प्रार्थना गीतों को सुनाना)

१. हर देश में तू, हर वेष में तू,
तेरे नाम अनेक तू एक ही है।

२. इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमज़ोर हो ना।

३. धन्यवाद प्रभो धन्यवाद(२)

जीवन मिला है तुझ से प्रभो

तेरी कृपा से हमें।

(छात्र शब्दोच्चारण, आरोह-अवरोह, लय-आदि पर ध्यान रखकर छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे (हर एक समूह से) अन्य एक प्रार्थना गीत सुनाइये।

प्रक्रिया-१ (सुनना-बोलना)

जयशंकरप्रसाद जी के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

१. जन्म

२. परिवार

३. रचनाएँ

(चार्ट के द्वारा प्रसाद जी के जीवन एवं साहित्य संबंधी विचारों से अवगत कराना)

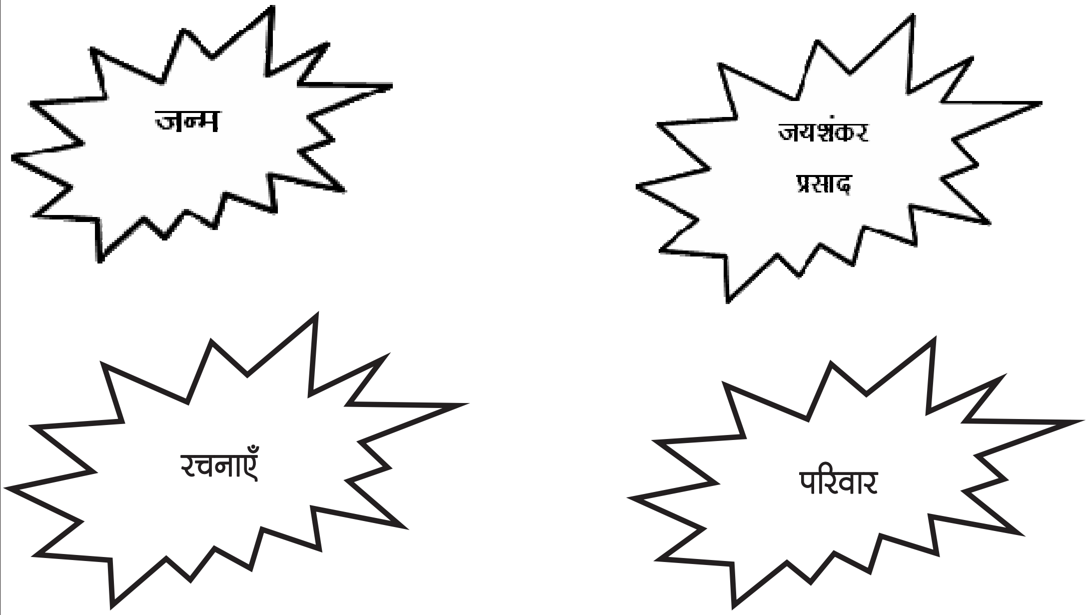

प्रक्रिया-२ (सुनना-बोलना)

उद्देश्यः-

*. छात्र को स्वर, भाव, राग ताल, लय से कविता पाठ करने के लिए समर्थ बनाना।

*. रसानुभूति की वृद्धि करना।

(शिक्षक सर्वप्रथम संपूर्ण कविता का शुद्ध,स्पष्ट लयानुसार,भावानुकूल सस्वर वाचन आदर्श प्रस्तुत करेंगे।)

छात्र कविता पाठ सुनकर भाव ग्रहण करने का प्रयास करेंगे।

➢ प्रभो ! कविता में किस का वर्णन हुआ है।

➢ प्रभु की अनंत माया जगत को कौन दिखा रहा है?

➢ तरंगमालाएँ क्या गा रही है?

प्रक्रिया-३(पढ़ना-लिखना)

उद्देश्यः-

*. कविता के भावार्थ को समझाना।

*. भगवान की लीला को समझाना।

(पहले समूह को कविता और बहुविकल्पीय प्रश्नयुक्त चार्ट देना और भावार्थ लिखने के लिए बताना)

१. भगवान की माया जगत को-------दिखा रही है।

अ. लीला आ आशा इ. पथ ई महिमा

२. तरंगमालाएँ----------का राग गा रही हैं।

अ.कृपा आ.दया इ.प्रशंसा ई. प्रेम

३. जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन्------में हुआ।

अ.१८८६ आ.१८५३ इ.१८८९ ई. १८८७

४. प्रसाद जी का पहला काव्य संग्रह ------है।

अ.झरना आ. कानन कुसुम इ. कंकाल ई. कामायनी

(दूसरे समूह को कविता और लघूत्तर के प्रश्नयुक्त चार्ट देना और भावार्थ लिखने के लिए बताना)

१. विमल इंदु किस का प्रतीक है?

२. प्रभु की दया से क्या पूर्ण होता है?

३. प्रसाद जी के पिता कौन थे?

४. प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?

५. दयानिधि कौन है?

(तीसरे समूह को जोड़कर लिखने का चार्ट देना)

१. कानन-कुसुम	जगत को लीला दिखा रही है।
२. मनोरथ	यही तो आशा दिला रही है।
३. आनादि तेरी अनंत माया	अभिलाषा
४. सभी ये कहते पुकार करके	पहला काव्य-संग्रह

अभ्यास कार्यः-

प्रक्रिया-४ (पढ़ना-लिखना)

उद्देश्यः-

*. सस्वर वाचन कौशल का विकास कराना।

*. भाषिक कौशल का विकास कराना।

*. विभिन्न संदर्भों द्वारा कविता के मूल आशय को प्राप्त कराना।

(छात्रों को कविता वाचन करने का निर्देश देना। अशुद्ध उच्चारण को ठीक कराना)

समूह-१ - प्रभू की दया को अपने वाक्यों में वर्णन करना।

आकलन बिंदु

विषय	वर्णन की क्षमता	विषय ज्ञान	शब्द प्रयोग	कुल
अंक	२	२	१	५

समूह-२ - प्रभु की दशा को दर्शानेवाले संगतियों को चित्र के द्वारा प्रस्तुत करना

आकलन बिंदुः-

विषय	चित्र लिखने की क्षमता	विषय प्रस्तुतीकरण	वर्णन करने की क्षमता	कुल
अंक	२	२	१	५

समूह-३ - कविता में आये हुए नये शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करना।

विषय	शब्द चयन	अर्थग्रहण	भाषा प्रयोग	कुल
अंक	२	१	२	५

परियोजनाः-

१. प्रार्थना गीतों का संग्रह करना और कक्षा में सुनाना।

२. प्रार्थना गीत गाने के संदर्भों की तालिका बनाना।

३. सूरदास- पद में अभिव्यक्त प्रभु की दया का अंकन करना।

चतुर्थ–अध्याय

व्याकरण शिक्षण

भाषा शिक्षण, बिना व्याकरण शिक्षण के अपूर्ण माना जाता है। व्याकरण मूलतः भाषा का शासक होता है। व्याकरणिक नियमों का अनुपालन न करने से भाषा अशुद्ध बन जाती है। इस संदर्भ में पंडित सीताराम चतुर्वेदी की बातें ज्ञातव्य हैं–**यदि भाषा को रथ और भाव को रथी मान लें तो व्याकरण को सारथी मान सकते हैं,** चूँकि व्याकरण ही भाषा रूपी रथ को सही मार्ग पर इस प्रकार चलाता है कि भाव सरलता से अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच जाते हैं। इसका वास्तविक अर्थ है कि व्याकरण शिक्षण, भाषा शिक्षण का अभिन्न अंग है। भाषा को शुद्ध रूप देने का काम व्याकरण पर ही निर्भर है।

व्याकरण वास्तव में शास्त्र के बराबर है, जिसकी सहायता से हम भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करते हैं। व्याकरण शब्द वि(विशेष रूप से) + (पूरी तरह) करण (व्याख्यान करना) से निष्पन्न है। इसका अर्थ है कि भलि–भाँति जानकारी।

व्याकरण वह शास्त्र है जो किसी भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, समझना,लिखना और पढ़ना सिखाता है।

व्याकरण अपने आप में लक्ष्य नहीं है। यह भाषा को सीखने और विशेषकर सही रूप से बोलने और लिखने में सहायता करता है।

व्याकरण पढ़ाते समय अध्यापक को व्याकरण के मूलभूत सिद्धांत अवश्य स्पष्ट होने चाहिए। उसे भाषा के प्रचलित और सही प्रयोगों का ज्ञान भी होना चाहिए। उसका उद्देश्य छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में सक्षम बनाना

है। इसके लिए व्याकरणिक शब्दावली उतना ही पढ़ायी जाये। जितना कि छात्रों के कक्षा-स्त्तर के अनुकूल हो। प्रयोगों दूवारा ही व्याकरणिक शब्दावली से परिचित कराना अपेक्षित होगा।

प्राचीनकाल में, हमारे देश में व्याकरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता था। हर छात्र को व्याकरण शिक्षा पाना अनिवार्य माना जाता था। व्याकरण के ज्ञाता को पंडित कहा जाता था ।**पाणिनि पतंजलि** -आदि इसके आधार थे,इसलिए आज भी वे व्याकरण अधिष्ठाता कहलाते हैं। वास्त्तव में किसी भी भाषा पर प्रभुत्व पाने के लिए उसके व्याकरण की सही जानकारी अति आवश्यक है।

व्याकरण शिक्षण की आवश्यकताः-

भाषा साध्य है तो व्याकरण साधन है। भाषा का सही ज्ञान पाने के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता है,उनमें से व्याकरण भी एक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए व्याकरण शिक्षण को अधिक बल देना और उसके नियमों को पूर्णरूप से उपेक्षा करना दोनों सही नहीं है।

व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता पर बल देते हुए पंडित सीताराम चतुर्वेदी कहते हैं-**व्याकरण शिक्षण भाषा शिक्षण का एक अभिन्न अंग है। भाषा को शुद्ध बनाये रखने का काम, व्याकरण का ही है।**

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्यः-

* छात्रों को सही भाषा-तत्वों के सही ज्ञान के साथ उनका सही प्रयोग कराना।
* छात्रों को शुद्ध भाषा -प्रयोग सिखाना।
* भाषा को विकृत होने से बचाना।

* छात्रों को भाषा का शुद्ध रुप पहचानने में समर्थ बनाना।

* छात्रों में रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।

व्याकरण शिक्षण की उपयुक्त विधिः-

प्राचीन काल में व्याकरण शिक्षण सूत्र प्रणाली द्वारा दिया जाता था अर्थात् व्याकरण शिक्षण के लिए निगमन विधि अपनायी जाती थी। इस विधि में व्याकरणिक नियमों को कंठस्थ कराया जाता था।अब निगमन प्रणाली के बदले आगमन विधि अपनायी गयी है। इसमें व्याकरणिक नियमों को कंठस्थ कराने के बदले उदाहरणों को प्रस्तुत किया जाता है, उदाहरणों को देखकर छात्र/छात्रा नियम निर्धारण करते हैं।

आगमन विधि के आयामः-

१. उदाहण

२. तुलना और विश्लेषण

३. नियम-निर्धारण

४. अभ्यास

उपर्युक्त आयामों के आधार पर समास व्याकरणिक बिंदु पर व्याकरण पाठ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

आज व्यावहारिक व्याकरण शब्द की गूँज शिक्षा क्षेत्र के चारों ओर रही है । इसके अनुसार अध्यापक को पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय पाठों में आये हुए विभिन्न व्याकरणिक बिंदुओं को स्पष्ट करना चाहिए। इस प्रकार की **सहयोग प्रणाली** से छात्र सहज रूप में ही व्याकरणिक मुद्दों को समझ सकेंगे। गद्य शिक्षण में अनेक ऐसे प्रसंग आते हैं। जिनका लाभ उठाकर अध्यापक व्याकरणिक रूपों और नियमों का ज्ञान प्रदान कर सकता है।

अंत में कहने की बात है कि हमें व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष पर बल देना चाहिए। प्रयोगात्मक पक्ष को प्रस्तुत करना उचित होगा। यही पक्ष व्यावहारिक व्याकरण के महत्व को उजागर करता है। इस पक्ष में निष्णात होने के लिए पर्याप्त अभ्यास कराना चाहिए । अभ्यास रोचक होने चाहिए।

संदर्भः-

१.हिंदी भाषा शिक्षण दिनेशचंद्र भारद्वाज

२.हिंदी शिक्षण संदर्शिका-राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

प्रायोगिक पाठ का उदाहरण

समास का परिचय

(सुनना और बोलना)

उद्देश्यः-

१. छात्रों में शब्द भण्डार बढ़ाना।

२. छात्रों में तर्क शक्ति का विकास करना।

३. समास शब्दों को पहचानने की कला का विकास करना।

४. छात्रों में शब्द विश्लेषण करके नियम निर्धारण करने की कुशलता विकास करना।

प्रक्रियाः-

कक्षा के छात्र-छात्राओं को विभिन्न समूहों में बाँटना । बाँटने के उपरांत अपने-अपने समूह में बैठने के लिए कहना।

समूह के अनुसार समास (व्याकरण) पाठाधिरित बहुविकल्पीय प्रश्नों के चार्ट बनाकर, छात्र-छात्राओं के समूह को देना। उन चार्टों के प्रश्नों को ,बारीकी से देखने के लिए कहना।

मार्गदर्शक-मार्गदर्शिका **आगम विधि** द्वारा समास के उदाहरणों (पाठ्यपुस्तक के आधारित हो) चार्ट, श्यामपट और कंप्यूटर द्वारा प्रस्तुत करके छात्र-छात्राओं द्वारा नियम निर्धारण कराना।

पाठ प्रस्तुतीकरण के पश्चात छात्र-छात्राओं से समूह में दिये गये चार्ट के प्रश्नों का हर समूह से उत्तर कहलवाना।

उत्तर कहलाने के बाद छात्र-छात्राओ से होनेवाली गलतियों की सूची बनाकर,पृष्टापोषण द्वारा उनको सुधारने के लिए मार्गदर्शन देना।

सूचनाः अवलोकन सूची द्वारा समूह में होनेवाली गलतियों का निर्धारण करना।

आकलनः-

आकलन बिंदु	**अंक निर्धारण**
१. समास शब्द पहचानना	१
२. समास शब्दों का विग्रह	२
३. समास शब्द बनाना	२

पृष्ठापोषणः-

छात्र-छात्राओं से होनेवाली गलतियों की तालिका के अनुसार उनको सुधारने के लिए प्रयास करना।

(समास पाठ शिक्षण के संदर्भ में समूहों को देने के लिए प्रश्नों के चार्टः-)

चार्ट-१

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय उत्तर दिये गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर बोलियेः-

१. **राजनीति** शब्द में समास है-

अ. बहुव्रीही समास

आ. अव्ययीभाव समास

इ. तत्पुरुष समास

ई. कर्मधारय समास

२. **महात्मा** शब्द का विग्रह रूप है-

अ. महान आत्मा है। आ. महान है जिसकी आत्मा ।

इ. जो आत्मा महान है। ई. आत्मा महान है।

३. खाना और पीना का समासिक रूप है–

अ. खाना–पाना

आ. खान–पान

इ. खापान

ई. खाना–पानी

४. दोपहर शब्द-------- समास का उदाहरण है–

अ. तत्पुरष

आ. द्विगु

इ. बहुर्व्रीही

ई. कर्मधारय

५. षड़ानना शब्द में प्रयुक्त समास है–

अ. द्विगु

आ. द्वंद्व

इ. बहुर्व्रीही

ई. कर्मधारय

६. **असंभव** शब्द में समास है–

अ. नञ तत्पुरष समास

आ. तत्पुरुष समास

इ. बहुर्व्रीही

ई. द्विगु

चार्ट-२

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए चार-चार बहुविकल्पीय उत्तर दिये गये हैं, उनमें से सही उत्तर चुनकर बोलियेः-

१. **गुण-दोष** शब्द का विग्रह कीजिये-

अ. गुण या दोष

आ. गुण और दोष

इ. गुण का दोष

ई. गुणों का दोष

२. **राजवंश** शब्द का विग्रह रूप है-

अ. राजा का वंश

आ. राजा से वंश

इ. राजा के लिए वंश

ई. राजा को वंश

३. उदाहरणों को समास भेद के अनुसार जोड़कर लिखियेः-

'अ' भाग	**'ब' भाग**
नीलगिरि	द्वंद्व
जगनमोहन	द्विगु
	अव्ययी भाव
	कर्मधारय
	तत्पुरुष

४. **प्रतिदिन** शब्द में अव्ययीभाव समास है,तो भरपेट शब्द में समास है-

अ. अव्ययीभाव समास

आ. द्विगु समास

इ. द्वंद्व समास

ई. तत्पुरुष समास

५. **संपर्क की भाषा** विग्रह का समास रूप है–

अ. संपर्कभाषा

आ. संपर्क –भाषा

इ. संपर्क रहित भाषा

ई. संभाषा

६. **द्विगु समास** का उदाहरण है–

अ. पंचवटी

आ. त्रिनेत्र

इ. दशानन

ई. चतुर्भुज

चार्ट–३

१. **अव्ययीभाव समास** का उदाहरण है–

अ. अनजाने

आ. त्रिनेत्र

इ. लंबोदर

ई. पंचानद

२. **चंद्र के समान मुख** है विग्रह का समास रूप है–

अ. चंद्र का मुख

आ. चंद्रमुख

इ. मुखचंद्र

ई. चंद्र–मुख

३. **द्वंद्व समास** का उदाहरण है–

अ. राजा–रानी

आ. काला मिर्च

इ. सतरंगी

ई. तिरंगा

४. **पंकज** शब्द में समास है-

अ. द्वंद्व

आ. द्विगु

इ. बहुव्रीही

ई. तत्पुरुष

५. **चक्रधर** शब्द का विग्रह रूप है-

अ. चक्र धर

आ. चक्र जिसने धारण कर लिया है।

इ. चक्र और धर

ई. चक्र को धारण करनेवाला

६. **भरपेट** शब्द ------ समास का उदाहरण है-

अ. अव्ययी

आ. द्वंद्व

इ. तत्पुरुष

ई. बहुव्रीही

चार्ट-४

१. **पीतांबर** शब्द का विग्रह रूप है-

अ. जो अंबर पीता है।

आ. जिसका अंबर पीता है।

इ. पीता का अंबर ।

ई. अंबर पीता है।

२. **राष्ट्रभाषा** शब्द में समास है-

अ. तत्पुरुष

आ. द्विगु

इ. अव्ययीभाव

ई. द्वंद्व

३. **द्विगु समास** का उदाहरण है–

अ. दोपहर

आ. त्रिनेत्र

इ. चतुर्भुज

ई. दशानन

४. **गुण–दोष शब्द में निहित** समास है–

अ. द्विगु

आ. द्वंद्व

इ. कर्मधारय

ई. अव्ययीभाव

५. **त्रिभुवन** शब्द का विग्रह रूप है–

अ. तीन भुवन

आ. तीनों भुवन

इ. तीन भवनों का समूह

ई. भुवन तीन

६. **गजानन** शब्द में समास है–

अ. तत्पुरुष

आ. बहुव्रीही

इ. नञ तत्पुरुष

ई. कर्म तत्पुरुष

अभ्यास

(पढ़ना और लिखना)

उद्देश्यः-

१. छात्रों को विग्रह करने में कुशल बनाना।

२. छात्रों में समास परिचय का दृढ़ीकरण करना।

३. छात्रों में समास शब्दों की पहचानने की कला बढ़ाना।

४. छात्रों में समास शब्द निर्माण की कला बढ़ाना।

प्रक्रियाः-

- पूर्व में निर्धारित हर समूहों को एक-एक अभ्यास चार्ट देना।(अभ्यास विभिन्न प्रकार के हो,जैसे बहुविकल्पीय प्रश्न,समास शब्दों को विग्रह करके समास का नाम बताना,विग्रहित समास शब्दों को समस्त शब्द बनाकर समास का नाम लिखना। शब्दों का समास पहचानना,वाक्यों में समास शब्द ढूँढ़कर लिखना- आदि) प्रश्नों के अनुसार उत्तर लिखना।
- अभ्यासों को देने के बाद मार्गदर्शक/मार्गदर्शिका छात्र-छात्रों के अभ्यास कार्य को अवलोकन सूची द्वारा निर्धारित करना। छात्रों ने क्या-क्या किया है? कहाँ मार्गदर्शन की आवश्यकता है ?पहचानना।
- छात्र-छात्राओं की अभ्यासों में निहित गलतियों को सुधारने के लिए पृष्ठापोषण देना।

आकलन बिंदु	अंक
१. विग्रह करना	२
२. पहचानना	१
३. समास शब्द बनाना	२

अभ्यास कार्य के लिए चार्ट

चार्ट–१

➢ **विग्रह करके समास का नाम लिखियेः–**

१. आश्रयधाम ----------- -------------

२. यथाशक्ति----------- -------------

३. पंचवटी------------- ------------

४. नीलकमल---------- ------------

५. पंकज------------ ------------

६. काम–काज-------- ------------

➢ **विग्रह शब्दों को समास शब्द बनाइये और समास का नाम लिखियेः–**

१. खान और पान----------- -------------

२. तीनों भुवनों का समूह-------- -------------

३. नील गिरी ----------- -------------

४. पर्वतों की माला ----------- ------------

५. जन्म से जन्मा हुआ--------- - ------------

६. पेट भर ----------------- -------------

➢ **निम्नलिख समास शब्दों का नाम पहचानकर लिखियेः–**

१. कनकलता-------------------------

२. अनजाने--------------------------

३. चिड़ियामार------------------------

४. त्रिधारा----------------------------

५. दाल–रोटी-------------------------

६. घनश्याम-------------------------

- **उदाहरणों को समास भेद के अनुसार जोड़कर लिखियेः-**

अ भाग		ब भाग
१.	त्रिवेणी	तत्पुरुष
२.	सीता-राम	कर्मधारय
३.	शताब्दी	द्वंद्व
४.	भू-दान	अव्ययीभाव
५.	नीलकंठ	द्विगु
६.	यथासंभव	बहुव्रीही

चार्ट-२

- **उदाहरणों को समास के अनुसार जोड़कर लिखियेः-**

१.	चक्रपाणि	द्विगु
२.	चौराह	द्वंद्व
३.	भला-बुरा	तत्पुरुष
४.	प्रेमसागर	अव्ययीभाव
५.	आजन्म	कर्मधारय
६.	मुखचंद्र	बहुव्रीही

- **निम्नलिखित समास शब्दों का नाम पहचानकर लिखियेः-**

१. नवरत्न----------------

२. राजकिशोर--------------

३. नीलकमल--------------

४. दीन-दलित-------------

५. महात्मा----------------

६. आजन्म----------------

- **विग्रह शब्दों का समास शब्द बनाइये और समास का नाम पहचानकर लिखियेः-**
  १. नौ रत्नों का समूह------------ ------------
  २. कनक के समान लता--------- ------------
  ३. खट के बिना--------------- ------------
  ४. सुख और दुख --------------- -------------
  ५. पाँच नदियों का समूह -------- ------------
  ६. तीन नेत्र है जिसके ----------- ------------
- **निम्नलिखित समास शब्दों को विग्रहकरके,समास का नाम लिखियेः-**
  १. मृगनयनी--------------- -----------
  २. सुबह-शाम-------------- -----------
  ३. बारहमासा-------------- -----------
  ४. राजधानी--------------- -----------
  ५. पीतांबर---------------- -----------
  ६. तिरंगा---------------- -----------

चार्ट-३

- **विग्रह शब्दों को समास शब्द बनाइये और समास का नाम पहचानकर लिखियेः-**
  १. राजा का महल ------------ ---------------
  २. दिन ब दिन-------------- ---------------
  ३. कमल रूपी कर------------ ---------------
  ४. चार राहों का समूह---------- ---------------
  ५. दो और चार-------------- ---------------
  ६. लंबा है उदर जिसका--------- ---------------

- **उदाहरणों को समास के अनुसार जोड़कर लिखियेः-**

१.	गुण-दोष	तत्पुरुष
२.	राजसभा	द्विगु
३.	दशानन	द्वंद्व
४.	सद्धर्म	अव्ययी
५.	सतसई	बहुव्रीही
६.	यथासंभव	कर्मधारय

- **समास शब्दों का विग्रह करके, समास का नाम पहचानकर लिखियेः-**

१. लंबोदर----------- --------------

२. जलाशय-------------------------

३. पंचरत्न---------- --------------

४. पाप-पुण्य-------- --------------

५. काला मिर्च-------- --------------

६. इंद्रधनुष--------- -------------

- **निम्निलिखित समास शब्दों को विग्रह करके लिखियेः-**

१. त्रिवर्ण -----------

२. परलोकागमन-----------

३. त्रिनेत्र----------------

४. त्रिधारा---------------

५. माता----------------

६. जानकीसुत-------------

चार्ट-४

- **निम्नलिखित समास शब्दों को विग्रह करके लिखियेः-**

१. कालाधन------------

२. यथाशक्ति------------

३. नीरज--------------

४. विद्यालय------------

५. नवरात्री---------------

६. नष्ट-भ्रष्ट------------

- **निम्नलिखित समास शब्दों को विग्रह करके समास का नाम पहचानकर लिखियेः-**

१. गुरुदक्षिणा----------- -----------------

२. पंचानन------------- -----------------

३. यथाशीघ्र------------ -----------------

४. नर-नारी------------ -----------------

५. पुण्यकाल------------ -----------------

६. पंचभूत------------- -----------------

- **समास के अनुसार उदाहरणों को जोड़कर लिखियेः-**

अ बाग	**ब भाग**
१. अव्ययीभाव	भाई-बहन
२. तत्पुरुष	पंचपरमेश्वर
३. कर्मधारय	षटकोण
४. द्वंद्व	यथामूल्य
५. द्विगु	सप्ताह
७. बहुव्रीही	लाल दवात

➢ **विग्रह शब्दों को समास शब्द बनाकर,समास का नाम पहचानकर लिखियेः-**

१. पुस्तकों केलिए आलय---------- ------------

२. पति और पत्नी-------------- -----------

३. नौ ग्रहों का समूह ----------- ------------

४. जिनको चार भुजाएँ हैं--------- -------------

५. तथा के अनुसार ------------ -------------

६. जो नाग कला है ----------- ------------

रचनात्मक आकलन-

➢ **निम्नलिखित शब्दों के सामने सही (✔) गलत(X) निशाना लगाइयेः-**

१. **दशानन** शब्द द्‌विगु समास है। सही / गलत

२. तीन रंगों के समूह को **तिरंगा** कहते है। सही / गलत

३. **राजमाता** का विग्रह रूप है-राज और माता । सही / गलत

४. **पंचवटी** शब्द द्‌विगु समास है । सही / गलत

५. जिसका उदर लंबा है उसे **लंबा उदर** कहते है। सही / गलत

६. काला मिर्च का विग्रह रूप-**काला का मिर्च**। सही / गलत

➢ **पहले दो शब्दों के अनुसार तीसरे शब्द का उत्तर रिक्त स्थान में भरियेः-**

१. त्रिनेत्र बहुव्रीहि समास का उदाहरण है तो **तिरंगा**-------------

२. अनजाने अव्ययीभाव समास है तो भरपेट-----------------

३. खान-पान द्‌वंद्‌व समास है तो **राजनीति** -----------------

४. चतुर्भुज बहुव्रीही समास है तो **कर्मधारय समास** का उदाहरण-------

- **समास के अनुसार उदाहरण जोड़कर लिखियेः-**

अ बाग	**ब भाग**
१. अव्ययीभाव	श्रद्धा भक्ति
२. तत्पुरुष	महात्मा
३. द्विगु	चतुर्भुज
४. द्वंद्व	पंचवटी
५. कर्मधारय	यथासंभव
६. बहुव्रीही	पर्वतमाला

- **निम्नलिखित समास शब्दों में से शब्दों को चुनकर समास भेद के सामने लिखियेः-**

ज्ञानपीठ, संपर्कभाषा, तालमेल, आश्रयधाम, आस-पास, देश विदेश, जलप्रवाह, राजवंश, गुण-दोष, चढ़ना - उतरना, थोड़ा-बहुत,

तत्पुरुषः-----------------------------------

कर्मधारयः-----------------------------------

द्वंद्वः-----------------------------------

द्विगुः-----------------------------------

बहुव्रिहीः-----------------------------------

अव्ययीभावः-----------------------------------

परियोजना कार्य-

विषय :- अपने पाठ्यपुस्तक से समास शब्दों को चुनकर तालिका बनाइये, उन्हें विग्रह कीजिये और उनके समास का नाम लिखियेः-

उद्देश्यः-

१. छात्रों में खोज़ प्रवृत्ति का विकास करना।

२. समास शब्दों का परिचय देना।

३. तर्क और चिंतन शक्ति का विकसित करना।

४. समास शब्दों को विग्रह करने के नियमों से परिचित कराना।

५. समास शब्द पहचानने की कला का विकास करना।

परियोजना प्रस्तुतीकरण के प्रारूपः-

१. समास शब्दों का संग्रह करना।

२. समास शब्दों को विग्रह करके लिखना।

३. समास प्रकार के नीचे शब्दों को लिखना।

आकलनः-

	आकलन बिंदु	**अंक**
१.	समास शब्दों का संग्रह	२
२.	समास शब्दों का विग्रह	२
३.	समास पहचानना	१

समास परिचय

समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलाकर एक नया शब्द बनाया जाता है,तब उस मेल को समास कहा जाता है-जैसे दीन और दलित-दीन-दलित,राष्ट्र की भाषा-राष्ट्रभाषा।

समास के प्रकारों को निम्नलिखित आरेख द्वारा समझ सकते हैः-

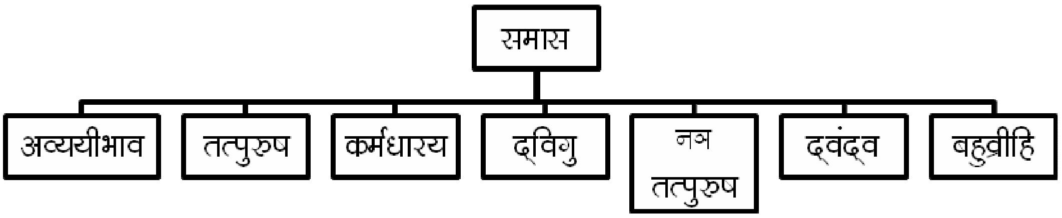

१.अव्ययीभाव समासः-

जिस समास में दूसरे शब्द प्रधान होता है,लेकिनपहले शब्द अव्यय हो तो अव्ययीभाव समास होता है। जैसेः- प्रतिदिन-दिन ब दिन, भरपेट-पेट भर-आदि।

२.तत्पुरुष समासः-

जिस समास में उत्तर शब्द प्रधान होता है और प्रथम शब्द प्रायः संज्ञा या विशेषण होता है। शब्दों के मध्य में कर्ता और संबोधन कारक की विभक्तियों को छोड़कर अन्य कारकों की विभक्तियाँ रहती हैः-जैसेः-

राष्ट्रभाषा-राष्ट्र की भाषा

संपर्कभाषा-संपर्क की भाषा

राजनीति-राज की नीति

राजमहल-राजा का महल

जलप्रपात-जल का प्रपात

राजवंश–राजा का वंश

संग्रहालय–संग्रह के लिए आलय

आश्रयधाम–आश्रय के लिए धाम

जलाशय–जल के लिए आश्रय

राजधानी–राज की धानी

पर्वतमाला–पर्वतों की माला

रक्षादल–रक्षा के लिए दल

राजकिशोर–राजा का किशोर

प्रकृतिमाता–प्रकृति की माता

पर्वतावली–पर्वतों की आवली

पुस्तकालय–पुस्तकों का आलय

४. **कर्मधारय समासः–**

इसमें पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है,या पहला शब्द उपमान और दूसरा पद उपमेय होता है। जैसेः–

नील गिरि–जो गिरि नील है।

नील कंठ–नील है कंठ

सद् धर्म–जो धर्म सत है।

चंद्रमुख–चंद्र के समान मुख।

नीलकमल –जो कमल नील है।

५. **द्विगु समासः–**

समास शब्द में पहला पद संख्यावाचक है तो द्विगु समास होता है। जैसेः–

चौमास–चार मासों का समूह।

त्रिलोक–तीन लोकों का समूह।

पंचवटी–पाँच वटों का समूह।

त्रिभुवन-तीन भुवनों का समूह।

पंचरत्न-पाँच रत्नों का समूह।

नवरत्न-नव रत्नों का समूह।

६. **नञ तत्पुरुषः-**

समास शब्द में पहला शब्द अभाव का सूचक हो तो ,उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसेः-

अनंत -न अंत

असंभव-न संभव

अनारंभ-अन आरंभ

७. **द्वंद्व समासः-**

समास शब्द में दोनों शब्द प्रधान हो तो द्वंद्व समास कहते हैं। जैसेः-

खान-पान-खाना और पानी

गुण-दोष-गुण और दोष

काम-काज-काम और काज

दीन-दलित-दीन और दलित

८. **बहुव्रीही समासः-**

समास शब्द में कोई भी प्रधान नहीं होते हैं, बल्कि दोनों जुड़ जाने से एक नया अर्थ निकलता है उसे बहुव्रीही समास कहते हैं,जैसेः-

लंबोदर-जिसका उदर लंबा है।

पंकज-पंक से जन्म हुआ।

त्रिनेत्र-तीन नेत्र है जिसको

दशानन-दस आनन है जिसको

*****

पाठ्यपुस्तक में निहित समास शब्दकोश

राजनीति
जन्मजात
सभापति
महात्मा
महाविद्‍यालय
करोडपति
होश हवास
श्रद्‍धा-भक्ति
चौमासा
खान-पान
पुस्तकालय
जीवनशैली
विचार विनिमय
कामकाज
रक्षादल
कार्यकलाप
फूलदान
राजकिशोर
दोपहर
प्रकृतिमाता
पर्वतमाला
नीलगिरि
पर्वतावली
राजधानी
राजमहल
जगनमोहन

जलाशय
संग्रहालय
देश-विदेश
जलप्रपात
राजवंश
आस-पास
घूमना-फिरना
माता-पिता
असंभव
थोड़ा-बहुत
चढ़ना-उतरना
निस्संतान
आश्रयधाम
दीनदलित
गुण-दोष
ज्ञानपीठ
राष्ट्रभाषा
संपर्कभाषा

संदर्भ ग्रंथः- हिंदी वल्लरी १० वीं कक्षा-राज्य शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्-बेंगलूर

पाँचवाँ अध्याय

रचना शिक्षण

रचना का अर्थः रचना का अर्थ सजाना तथा सँवारना ।

*. प्रत्येक व्यक्ति में विचार और भाव होते हैं। उन्हें वह मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करने का प्रयास करता रहता है।

विचार तथा भावों को सुंदर, व्यवस्थित तथा प्रभावशाली रूप से प्रकट करने को ही रचना कहते हैं।

*. रचना वह सार्थक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा हम निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करते हैं।

रचना के विभिन्न भेदः-

१. मौखिक रचना

२. लिखित रचना

३. मार्गदर्शन रचना

४. मुक्त रचना

माध्यमिक स्तर पर रचना शिक्षण विधियाँः-

देखो और कहो विधि

प्रश्नोत्तर विधि

सूत्र विधि

रूपरेखा विधि

प्रबोधन(कल्पना) विधि

रचना के उद्देश्यः-

* बालकों में शुद्ध एवं परिष्कृत भाषा में भावाभिव्यक्ति करने की क्षमता उत्पन्न करना।
* शब्द भंडार में निरीक्षण, तर्क, कल्पना तथा विवेक शक्तियों का विकास करना।
* छात्रों को साहित्य-सृजन के लिए प्रेरित करना।
* छात्रों में अवलोकन, अध्ययन, चिंतन और मनन की रुचि उत्पन्न करना।
* छात्रों को कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव व्यक्त करने में निपुण बनाना।

नीचे दिये गये अंशों के आधार पर निबंध की रचना कीजियेः-

कंप्यूटरः-

१. आजकल कंप्यूटर का स्थान
२. कंप्यूटर के पितामह
३. कंप्यूटर के भागों का परिचय
४. छपाई क्षेत्र में कंप्यूटर का स्थान
५. दफ्तरों में कंप्यूटर का स्थान
६. निजी कंप्यूटर के उपयोग
७. कारखानों में कंप्यूटर के उपयोग
८. खगोल क्षेत्र में कंप्यूटर का स्थान
९. अंतर्जाल की व्यवस्था
१०. उपसंहार

पर्यावरण -प्रदूषणः-

१. अर्थ
२. पर्यावरण के अंतर्गत आनेवाले प्राकृतिक संपदा
३. प्रदूषण का अर्थ

४. पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार

५. पर्यावरण प्रदूषण के कारण

६. प्रदूषण रोकने के उपाय

७. उपसंहार

रचना पाठ

निबंध शिक्षण

कंप्यूटरः-

प्रथम सोपानः-

१. छात्रों को पाँच समूहों में बाँटना।

२. अपने समूह में बैठने के लिए सूचना देना।

द्वितीय सोपानः-

(सुनना-बोलना)

१. प्रत्येक समूह को दो-दो अंश देकर अपने विचार व्यक्त करने के लिए सूचना देना।

२. उन विचारों को क्रमागत रूप से बोलने के लिए सूचना देना।

३. चित्र/चार्ट/पीपीटी अन्य पुस्तक द्वारा अन्य विशेष विचारों को समावेश करने की सूचना देना।

तृतीय सोपान

(पढना-लिखना)

१. प्रत्येक समूह के छात्रों को अपने विचारों को श्यामपट पर लिखने की सूचना देना।

२. दूसरे समूह के छात्रों को श्यामपट पर लिखे अंशों को पढ़ने की सूचना देना।

चतुर्थ सोपानः-

सभी छात्रों को पूरे विषय को लिखने की सूचना देना।

पंचम सोपानः-

पर्यावरण प्रदूषण के संबंध में विचार संग्रहीत करने का परियोजना कार्य देना।

पत्र लेखन

(क्रियाकलाप द्वारा- नमूना-१)

शैक्षणिक यात्रा के लिए एक हज़ार रुपये माँगते हुए अपने पिताजी के नाम पर एक पत्र लिखिये::

दिनांकः--------

स्थानः---------

संबोधन

अभिवादन

विषय--------------------------------------

-------------------- ----------------------

सेवा में,

प्रेषक,

क्रियाकलाप–२

शैक्षणिक यात्रा के लिए एक हज़ार रुपये माँगते हुए अपने पिताजी के नाम पर एक पत्र लिखिये। (कोष्ठक के बाहर दिये गये विषयों के आधार पर पत्र की रचना कीजिये।

१. इस बार वार्षिक परीक्षा में अधिक अंक पाने की उम्मीद है।

२. पूज्य पिताजी

३. हमारे विद्यालय से हलेबीडु,बेलूर,मेलुकोटे,श्रवणबेलगोल आदि स्थानों के लिए प्रवास जा रहे हैं।

४. आपका/की /प्रिय पुत्र/पुत्री

५. दिनांक

६. मैं यहाँ सकुशल हूँ। वहाँ आपकी सकुशल चाहता हूँ / चाहती हूँ।
७. मैं भी प्रावस जाना चाहता। ती हूँ ।
८. सादर प्रणाम
९. इसलिए मुझे आप एक हजार रुपयों को एम. ओ. द्वारा भेज दीजिये।
१०. शेष विचार अगले पत्र पर ।
११. भाई को मेरा प्यार ।
१२. मैं ने विद्यालय की सभी परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त किये हैं।
१३. मैं यहाँ अच्छी तरह पढ़ रहा /रही हूँ।

अनुवादः-

अनुवाद क्या है? एक भाषा के मुत्पविभारों को इसरी भाषा में रुपांतरित करना आशवाद है।

अनुवाद **शब्द का शाब्दिक अर्थ** है 'वाद' शब्द संस्कृत के 'वद्' धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है 'विचार'। अनु उपसर्ग है जिसका 'पीछे' अर्थात अनुवाद का अर्थ है किसी के बाद कहना। दूसरे शब्दों में मूल भाषा के विचार तथा भावों को यथावत दूसरी भाषा में रूपांतरित करना।

अनुवाद के उद्देश्यः-

१. ज्ञान का विस्तार करना
२. दूसरे भाषिक समुदाय के सांस्कृतिक परिचय को प्राप्त करना।
३. दूसरी भाषा स्वरूप से परिचित होना।
४. भाषा पर प्रभुत्व बढ़ाना।

अनुवाद की विधियाँः-

अनुवाद के अनेक प्रकार हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दृष्टि से यहाँ दो प्रकारों को उल्लेख किया गया है। वे हैं-

१. शब्दानुवाद

२. भावानुवाद

अनुवाद अभ्यास प्रक्रियाः-

शब्दों के अनुवाद प्रक्रियाः- छात्रों को समूहों में विभक्त करके पाठ्यपुस्तक/ अन्य पुस्तक के कुछ शब्दों को अनुवाद करके बोलने के लिए सूचना देना।

उदाहरणार्थः- आगे, पीछे, बीच, दाये, बाये,का,की,के,ने, को , में पर, बड़ा, छोटा,बढ़ना, होना खाना, जाना, पढ़ना , लिखना, धीरे, आहिस्ता, तेज, कुत्ता , घोड़ा, चीता।

वाक्यांशों के अनुवाद अभ्यास प्रक्रिया

आगे जाना, तेज लिखना, जाने पर, छोटा जादूगर, धीरे-धीरे बढ़ना, लिखने को वाक्यों के अनुवाद अभ्यास प्रक्रियाः-

घोड़ा तेज़ दौड़ता है।

राम तेज़ लिखता है।

बड़े-घोड़े पर सवार करना आसान नहीं है।

हाथी धीरे-धीरे चलता है।

अन्य क्रियाकलापों के द्वारा अभ्यास प्रक्रियाः-

कर्नाटक की राजधानी बेंगलूर ।

ಕರ್ನಾಟಕ --------- ರಾಜಧಾನಿ ಬೆಂಗಳೂರು

घर में चार कमरे हैं।

ಮನೆ -------------- ಕೊಠಡಿಗಳಿವೆ.

हमारा विद्यालय हमारे घर से बहुत निकट है।

ನಮ್ಮ --------- ತುಂಬಾ ಹತ್ತಿರವಿದೆ.

चित्र देखकर कहानी रचना।

इसी प्रकार अन्य चित्रों की सहायता से निबंध की रचना कराइये।

आकलन बिंदु और अंक

निबंध लेखनः-

१. विषय ज्ञानः १

२. प्रस्तुतीकरणः १

३. भाषा- १

४. शैली- १

५. क्रमबद्धता- १

पत्रलेखन

१. प्रेषक/प्राप्तकरने वाले का पता, स्थान, दिनांक-१

२. संबोधन तथा अभिवादन-१

३. विषय विस्तार-१

४. भाषा तथा भाव-१

५. मापन-१

कहानी रचनाः-

१. भाषा - २

२. भाव - २

३. शैली - १

अनुवादः-

१. भाषा - ढाई अंक

२. भाव - ढाई अंक

दसवीं कक्षा वार्षिक-कार्ययोजना साल-२०१४-१५

सत्र	स.और व्या.मू.	मास	उपलब्ध अवधि	विषय	शीर्षक	अवधि बँटन	विषय -विश्लेषण (अध्यापन शीर्षक)	पूर्णता का दिनांक	विलंब के कारण	शि.हस्ताक्षर	मु.शि.हस्ताक्षर	टिप्पणी
प्रथम	रचनात्मक आकलन-१	जून	१७	पद्य	प्रभो	१	कवि परिचय और सूरज का प्रभाव					
						१	सूरज की कृपा					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्टापोषण					
						१	परियोजना					
				या.व्या	समानार्थक शब्द	१	समानार्थक शब्दों का परिचय					
						१	अभ्यास कार्य					
				गद्य	रवींद्रनाथ ठाकुर	१	रवींद्रनाथठाकुर का बचपन					

						१	शिक्षा दीक्षा				
						१	रवींद्रनाथठाकुर को प्राप्त पुरस्कार				
						१	रवींद्रनाथ की शैक्षिक देन				
						१	अभ्यास कार्य				
						१	आकलन और पृष्ठापोषण				
						१	परियोजना				
				व्यावहारिक व्याकरण	विलोमार्थक शब्द	१	विलोमार्थक शब्द				
						१	वि.अ और समान अर्थ शब्दों का अभ्यास कार्य				
						१	आकलन और पृष्ठापोषण				

		जुलाई	१८			१	परियोजना					
				अनुच्छेद रचना	राष्ट्रीय एकता	१	राट्रीय त्योहार,राष्ट्रीय संकेत और राष्ट्रभाषा					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
				रचना	पत्रलेखन	१	व्यावहारिक और पारिवारिक पत्र					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
				गद्य	भक्तों के भगवान	१	करोड़पति की आरंभिक दशा-दिशा					
प्रथम						१	भिखारी और भिखारी बच्चा					
						१	भगवान की सहायता का स्वरूप					
						१	अभ्यास कार्य					

						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्या.व्या	लिंग	१	शब्दों की लिंग पहचान					
						१	अन्यलिंग के नियम					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
		आगस्त	१८	स.और व्या .मू.	आकलन	१	**रचनात्मक आकलन-१**					
						१	**पृष्ठापोषण**					
	रचनात्मक आकलन-२			गद्य	इंटरनेट क्रांति	१	रोहन की उम्मीद और और इंटरनेट					
						१	इंटरनेट की उपयोगिता					

						१	इंटरनेट का प्रयोग क्षेत्र					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्यावहारिक व्याकरण	वचन	१	अन्यवचन के नियम					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	परियोजना					
				अनुच्छेद रचना	प्रस्तुत समस्याएँ	१	जनसंख्या,प्रदूषण और बेरोज़गारी					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/पृष्टापोषण					
				पद्य	मातृभूमि	१	कवि परिचय और मातृभूमि की देन और वर्णन					
						१	अभ्यास कार्य					

		सितंबर	१८			१	अकालन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्यावहारिक व्याकरण	कारक	१	कारक और परसर्गों का प्रयोग					
प्रथम						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/पृष्टापोषण					
						१	परियोजना					
						१	गिलहरी की आरंभिक दशा					
				गद्य	गिल्लू	१	गिलहरी की आरंभिक चेष्टाएँ					
						१	गिलहरी का भोजन					
						१	गिलहरी का निधन					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					

				व्यावहारिक व्याकरण	पत्रलेखन	१	व्यावहारिक और पारिवारिक पत्र					
						१	अभ्यास कार्य					
				गद्य (एकांकी)	बसंत की सच्चाई	१	बसंत और राजकिशोर					
						१	प्रताप और राजकिशोर					
						१	बसंत की सच्चाई का परिणाम					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				म और व्या.मू.	आकलन	१	**रचनात्मक परीक्षा-२ और पृष्ठापोषण**					
						२	**योगात्मक आकलन-२ और पृष्ठापोषण**					

अक्तूबर की छुट्टियाँ

द्वितीय अवधि	रचनात्मक आकलन-३	नवंबर	१८	गद्य	कर्नाटक की संपदा	१	करर्नाटक में स्थित कारखाने और नदियाँ					
						१	कर्नाटक की ऐतिहासिकता और कवि					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	**आकलन और पृष्टापोषण**					
						१	परियोजना					
				रचना	पत्र लेखन	१	व्यावहारिक और पारिवारिक पत्र					
						१	अभ्यास कार्य					
				व्यावहारिक व्याकरण	समास	१	समास और समा के भेद					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
				गद्य	आत्मक श्र	१	लेखक का बचपन और बीमारी					

						१	रेस्तराँ मालिक और लेखक					
						१	दूसरा विश्वयुद्ध का वातावरण					
						१	लेखक में साहित्यिक रुझान की भूमिका					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन और पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्या.व्या	प्रेरणार्थक क्रिया	१	प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना					
		दिसंबर	१८			१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
				गद्य	ईमानदारों के सम्मेलन में	१	लेखक का स्वागत					
						१	ईमानदारों के सम्मेलन में बेईमान					
						१	अभ्यास कार्य					

						१	आकलन/ पृष्ठापोषण						
						१	परियोजना						
				व्य. व्या.	कि/की	१	कि और की प्रयोग						
						१	अभ्यास कार्य						
				पद्य	अभिनव मनुष्य	१	कवि परिचय और बच्चे का स्नेह						
						१	मानवीयता और भाईचारा						
						१	अभ्यास कार्य						
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण						
						१	परियोजना						
				व्य. व्या.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	१	वाक्यों का प्रस्तुतीकरण						
						१	अभ्यास कार्य						
						१	आकलन और पृष्ठापोषण						
						१	परियोजना						

			१८	अनुच्छेद रचना	समूह माध्यम	१	रेडियो,दूरदर्शन,कंप्यूटर, समाचारपत्र					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				गद्य	वृक्ष प्रेमी तिम्मक्का	१	**रचनात्मक आकलन-३**					
						१	**पृष्ठापोषण**					
	रचनात्मक आकलन-४	जनवरी				१	वचपन					
						१	सामाजिक देन					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्या. व्या.	विराम चिह्न	१	विराम चिह्नों का प्रयोग					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				हिंदी दोहे	तुलसीदास	१	कवि परिचय और दोहे-१					

						१	दोहे-२,३					
						१	दोहे-४,५					
		फरवरी	१७			१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				व्या.व्या	काल	१	काल और उसके भेद					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				पद्य	सूरदास	१	कवि परिचय और सूर के पद					
						१	सूरदास के पद					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					

				व्या.व्या	मुहावरे और लोकोक्ति	१	मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				गद्य	साहित्य सागर की मोती	१	साहित्यकार का बचपन और शिक्षा					
		मार्च				१	साहित्यकार का कार्यक्षेत्र					
						१	पुरस्कार					
						१	अभ्यास कार्य					
						१	आकलन/ पृष्ठापोषण					
						१	परियोजना					
				पुनरावर्तन		१	**रचनात्मक आकलन-४**					
						४	**पृष्ठापोषण**					
			१४			९	**पुनरावर्तन और द्वितीय योगात्मक आकलन**					

समय सारिणी

दिन		९.००–९.३०	९.३०–१०.४५	१०.४५–११.१५	११.१५–११.४५	११.४५–१.१५	१.१५–२.००	२.००–३.१५	३.१५–३.४५	३.४५–४.१५	४.१५–५.३०
प्रथम दिन		पंजीकरण और उद्घाटन					प्रशिक्षण साहित्य की भूमिका				
द्वितीय दिन	अ भाग	सामान्य	गद्य शिक्षण	चाय विराम	रस प्रश्न	व्याकरण शिक्षण	भोजन का विराम	प्रायोगिक पाठ (गद्य)	चाय विराम	आशुभाषण	गद्य पाठ की तैयारी
	ब भाग		पद्य शिक्षण		आशुभाषण	रचना शिक्षण		प्रायोगिक पाठ (पद्य)		रस प्रश्न	पद्य पाठ की तैयारी
तृतीय दिन	अ भाग	सामान्य	प्रस्तुतीकरण (गद्य पाठ)	चाय विराम	चित्रकला	प्रायोगिक पाठ (व्याकरण)	भोजन का विराम	पाठ की तैयारी	चाय विराम	भाषण	प्रस्तुतीकरण (व्याकरण)
	ब भाग		प्रस्तुतीकरण (पद्य पाठ)		भाषण	प्रायोगिक पाठ (रचना)		पाठ की तैयारी		चित्रकला	प्रस्तुतीकरण (रचना)
चतुर्थ दिन	अ भाग	सामान्य	पद्य शिक्षण	चाय विराम	अभिनय	रचना शिक्षण	भोजन का विराम	प्रायोगिक पाठ (पद्य)	चाय विराम	चर्चा	पद्य पाठ की तैयारी
	ब भाग		गद्य शिक्षण		चर्चा	व्याकरण शिक्षण		प्रायोगिक पाठ (गद्य)		अभिनय	गद्य पाठ की तैयारी
पंचम दिन	अ भाग	सामान्य	प्रस्तुतीकरण (पद्य पाठ)	चाय विराम	शिबिरार्थियों द्वारा क्रियाकलाप	प्रायोगिक पाठ (रचना)	भोजन का विराम	पाठ की तैयारी	चाय विराम	शिबिरार्थियों द्वारा क्रियाकलाप	प्रस्तुतीकरण(रचना)
	ब भाग		प्रस्तुतीकरण (गद्य पाठ)			प्रायोगिक पाठ (व्याकरण)		पाठ की तैयारी			प्रस्तुतीकरण (व्याकरणा)